उपासना करते हैं। वे निर्विशेष विष्णु को, अर्थात् प्राकृत-जगत् के रूप में विष्णु को उपासते हैं। विष्णु भगवान् श्रीकृष्ण के अंश हैं; परन्तु निर्विशेषवादी, जो वास्तव में श्रीभगवान् में श्रद्धा नहीं रखते, अपनी कल्पना से समझते हैं कि विष्णुरूप भी निर्विशेष ब्रह्म का ही एक पक्ष है और ऐसे ही ब्रह्माजी रजोगुण के रूप हैं। इस प्रकार वे अपने को पंचोपासक कहते तो हैं, परन्तु यथार्थ सत्य को निर्विशेष ही मानते हैं और इसीलिए अन्त में इन सब उपास्यों को त्याग देते हैं। सारांश में, शुद्धसत्त्व स्वभाव वाले पुरुषों के संग से प्रकृति के नाना प्रकार के गुणों को शुद्ध किया जा सकता है।

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः।।५।।
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्।।६।।

अशास्त्रविहितम्=वेद-विरुद्ध (मनोकल्पित); **घोरम्**=दूसरों के लिए भयंकर; **तप्यन्ते**=तपते हैं; **ये**=जो; **तपः**=तप को; **जनाः**=मनुष्य; **दम्भ**=दम्भ (और); **अहंकार-संयुक्ताः**=अहंकार से युक्त; **काम**=कामना; **राग**=आसक्ति; **बल**=सामर्थ्य से; **अन्विताः**=वशीभूत; **कर्षयन्तः**=कृश करते हुए; **शरीरस्थम्**=शरीर में स्थित; **भूतग्रामम्**=प्राकृत तत्त्वों के समुदाय को; **अचेतसः**=अविवेकियों को; **माम्**=मुझ को; **च**=भी; **एव**=ही; **अन्तःशरीरस्थम्**=अन्तर में स्थित; **तान्**=उन्हें; **विद्धि**=जान; **आसुर**=आसुरी स्वभाव वाले; **निश्चयान्**=निःसन्देह।

अनुवाद

जो दम्भ और अहंकार सहित रजोगुण, कामना, आसक्ति और बल द्वारा प्रेरित होकर वेदविरुद्ध तप करते हैं और अपनी देह के साथ मुझ अन्तर्यामी परमात्मा को भी कष्ट पहुँचाते हैं, उनको तू निश्चित रूप से असुर जान।।५-६।।

तात्पर्य

कुछ मनुष्य तप-त्याग की ऐसी विधियों को कल्पित करते हैं, जिनका शास्त्रों में उल्लेख नहीं है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक उद्देश्य जैसे किसी स्वार्थ के लिए उपवास करना वेद-विरुद्ध है। शास्त्रों में पारमार्थिक उन्नति के लिए उपवास का विधान है, राजनीतिक अथवा सामाजिक उद्देश्यों के लिए नहीं। जो मनुष्य ऐसा तप करते हैं, वे भगवद्गीता के मत में निश्चित रूप से आसुरी स्वभाव वाले हैं। उनके ये कार्य शास्त्र-विरुद्ध होने से लोगों के लिए अहितकर हैं। वास्तव में अभिमान, अहंकार, कामना और इन्द्रियतृप्ति की आसक्ति से प्रेरित होकर ही वे ऐसे कार्य करते हैं। इन क्रियाओं से शरीर का भूतसमुदाय ही कृश नहीं होता, अपितु अन्तर्यामी परमात्मा को भी कष्ट पहुँचता है। किसी राजनीतिक उद्देश्य को लेकर किए जाने वाले वेद-विरुद्ध तप-उपवास आदि दूसरों के लिए उत्पातकारी हैं। आसुरी स्वभाव वाला समझता है कि